Faizane Abu Attar (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 357
Weekly Booklet : 357

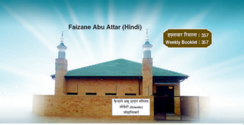

फ़ैज़ाने
अबू अत्तार

सफ़हात 18

चारपाई हवा में बुलन्द हो जाती 02
क्या अमीरे अहले सुन्नत के वालिद साहिब क़ादिरी थे ? 06
सरकारे मदीना का अबू अत्तार पर करम 10
अबू अत्तार की विरासत 11

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दावते इस्लामी)

पहले इसे पढ़ें

अल्लाह पाक ने वालिद को औलाद के सर पर ऐसा साया बनाया है जिस की मिसाल नहीं मिल सकती। जहां वालिदा की गोद औलाद के लिये शफ़्क़त का ''**सरचश्मा**'' है वहीं वालिद सायादार दरख़्त का दरजा रखता है जो सख़्त आज़्माइशें बरदाश्त कर के, दुख, दर्द सह कर भी अपनी औलाद के लिये मेह़नत मज़्दूरी कर के रोज़ी लाता और उन्हें खिलाता है। **अल्लाह** पाक हमें अपने वालिदैन की ख़िदमत करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए, जिन के वालिदैन फ़ौत हो गए हैं **अल्लाह** पाक उन्हें ग़रीक़े रह़मत फ़रमाए और उन की औलाद को अपने वालिदैन के लिये सदक़ए जारिया वाले नेक काम करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

दा'वते इस्लामी के चेनल पर होने वाले अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ के मुख़्तलिफ़ मदनी मुज़ाकरों के सुवाल जवाब, दीगर प्रोग्राम्ज़, मुख़्तलिफ़ किताबों और तह़रीरों वग़ैरा से रोशनी ले कर येह रिसाला बनाम ''फ़ैज़ाने अबू अ़त्तार'' तय्यार किया गया है जो अमीरे अहले सुन्नत के वालिदे मोह़तरम की तक़रीबन 71वीं बरसी 14 ज़ुल ह़ज शरीफ़ 1445 हिजरी (2024) के मौक़अ़ पर दा'वते इस्लामी की मजलिस अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के शो'बे ''हफ़्तावार रिसाला मुत़ालआ़'' की कोशिशों से मन्ज़रे आ़म पर आया है। इस रिसाले के मुत़ालए़ से अमीरे अहले सुन्नत के अब्बूजान के बारे में मा'लूमात ह़ासिल होने के साथ साथ नेक वालिद की चन्द आ़दात के बारे में भी पता चलेगा। इस्लामी भाई और इस्लामी बहन दोनों के लिये येह रिसाला यक्सां (या'नी एक जैसा) फ़ाएदे मन्द साबित होगा, اِنْ شَآءَ اللّٰہ الکریم। सवाब ह़ासिल करने और नेकी की दा'वत आ़म करने के लिये इस रिसाले को ख़ूब आ़म कीजिये और ढेरों नेकियां ह़ासिल कीजिये।

त़ालिबे दुआ़ए ग़मे मदीना व बक़ीअ़ व बे ह़िसाब मग़्फ़िरत

अबू मुह़म्मद त़ाहिर अ़त्तारी मदनी عُفِیَ عَنْہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

फ़ैज़ाने अबू अत्तार

दुआए ख़लीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत : या अल्लाह करीम ! जो मेरे दादाजान की सीरत पर मुश्तमिल रिसाला : **"फ़ैज़ाने अबू अत्तार"** के 18 सफ़हात पढ़ या सुन ले उसे और उस के सारे ख़ानदान को नेक नमाज़ी और सच्चा आशिक़े रसूल बना । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जो शख़्स मुझ पर एक मरतबा दुरूद शरीफ़ भेजता है, **अल्लाह** पाक और उस के फ़िरिश्ते उस पर दस मरतबा दुरूद (या'नी रह़मत) भेजते हैं और जो शख़्स मुझ पर दस मरतबा दुरूद भेजता है, **अल्लाह** पाक और उस के फ़िरिश्ते उस पर सो मरतबा दुरूद (या'नी रह़मत) भेजते हैं और जो मुझ पर सो मरतबा दुरूद भेजता है, **अल्लाह** पाक और उस के फ़िरिश्ते उस पर हज़ार मरतबा दुरूद भेजते हैं और उस के जिस्म को आग नहीं छूएगी । (مطالع المسرات، ص119)

पढ़ता रहूं कसरत से दुरूद उन पे सदा मैं
और ज़िक्र का भी शौक़ पए ग़ौसो रज़ा दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 118)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

चारपाई हवा में बुलन्द हो जाती

कोलम्बो (श्रीलंका) के एक साहिब का बयान है कि उन्हों ने पीराने

पीर, पीरे दस्त गीर ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के चाहने वाले एक शख़्स को देखा जो हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से मन्सूब "क़सीदए ग़ौसिया" के आ़मिल थे। और वोह "S.T.R सालेह़ मुह़म्मद" नामी फ़र्म (कम्पनी) में कोलम्बो के अन्दर मुलाज़मत करते थे। वोह वहां की आ़लीशान ह़नफ़ी मेमन मस्जिद में इमाम साहि़ब की ग़ैर मौजूदगी में मौक़अ़ मिलता तो नमाज़ें भी पढ़ा देते थे, उन्हों ने एक अ़र्से तक मस्जिद के इन्तिज़ामात संभाले और ख़ूब मस्जिद की ख़िदमत की सआ़दत पाई। **अल्लाह** पाक ने उन की ज़बान में ऐसा असर दिया कि जब वोह चारपाई पर बैठ कर "क़सीदए ग़ौसिया" का विर्द करते तो उन की चारपाई (Bed) ज़मीन से बुलन्द हो जाती।

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो। اٰمِین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللّٰہُ علیہِ واٰلہٖ وسلَّم

क्या आप जानते हैं येह आ़शिक़े ग़ौसे आ'ज़म और आ़मिले क़सीदए ग़ौसिया कौन थे? येह नेक शख़्स शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के वालिदे मोह़तरम "ह़ाजी अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ब्दुर्रह़ीम वाड़ी वाला"(1) थे। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه 1979 ई. में अपने भान्जे "अ़ब्दुल क़ादिर" की शादी पर कोलम्बो तशरीफ़ ले गए तो आप के ख़ालूजान "ह़ाजी अह़मद पघ्घी (मर्ह़ूम)" ने आप को आप के वालिद साहि़ब का क़सीदए ग़ौसिया पढ़ने के दौरान चारपाई बुलन्द होने वाला येह वाक़िआ़ सुनाया।

---

(1) ... वाड़ी वाला बिरादरी का SURNAME है।

चारपाई भी क़सीदा सुन के होती थी बुलन्द
पढ़ना है ऐसा अनोखा वालिदे अ़त्तार का

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ علٰى مُحَمَّد

क़सीदए ग़ौसिया का तआ़रुफ़

ऐ आशिक़ाने ग़ौसे आ'ज़म ! येह क़सीदए मुबारका हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसुल आ'ज़म ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیۡہِ की ज़बाने फ़ैज़ तरजुमान से अदा हुवा है और हमारे सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या में इस का विर्द दौलते ज़ाहिरी व बातिनी के हुसूल का सबब है, (बल्कि हर सिल्सिले का मुरीद इस से फ़ैज़ उठा सकता है) इस के 29 अश्आ़र हैं। इस क़सीदए मुबारका का रोज़ाना विर्द (या'नी पढ़ना) बहुत मुफ़ीद है।

"क़सीदए ग़ौसिया" के दस हुरूफ़ की निस्बत से क़सीदए ग़ौसिया की 10 बरकात

﴾1﴿ तस्ख़ीरे ख़लाइक़ (या'नी लोगों के दिल अपनी त़रफ़ माइल करने) के लिये बहुत मुफ़ीद है और कुर्बे ख़ुदावन्दी के हुसूल का ज़रीआ़ है।

﴾2﴿ क़सीदए ग़ौसिया पढ़ने से ह़ाफ़िज़ा बढ़ता है।

﴾3﴿ क़सीदए ग़ौसिया पढ़ने वाले को अ़रबी पढ़ने में बसीरत ह़ासिल होती है।

﴾4﴿ क़सीदए ग़ौसिया हर मुश्किल और सख़्त काम के लिये चालीस दिन रोज़ाना एक एक बार पढ़िये, اِنۡ شَآءَاللہ कामयाब होंगे।

﴾5﴿ क़सीदए ग़ौसिया (फ़्रेम करवा कर) जो कोई अपने सामने रखे (ताकि नज़र पड़ती रहे) और तीन मरतबा पढ़े, मक़्बूले बारगाहे ग़ौसियत मआब होगा और हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیۡہِ की ज़ियारत से मुशर्रफ़ होगा, اِنۡ شَآءَاللہ।

﴾6﴿ हर मरज़ व तक्लीफ़ के लिये तीन बार या पांच बार पढ़ना मुफ़ीद है।

﴾7﴿ बांझ (या'नी बे औलाद) औ़रत किसी सह़ीह़ ख़्वां (या'नी दुरुस्त पढ़ने वाले) से 41 या 21 बार क़सीदए ग़ौसिया पढ़वा कर पानी पर दम करवा कर किसी बोतल वग़ैरा में मह़फ़ूज़ करे और उस में से चालीस रोज़ तक थोड़ा थोड़ा पिये तो ह़ामिला हो जाएगी और हुज़ूर ग़ौसुल आ'ज़म رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की बरकत से बेटा अ़ता होगा, اِنْ شَآءَاللّٰہ ।

﴾8﴿ क़सीदए ग़ौसिया पढ़ कर रोग़न (या'नी तेल) पर दम कर के आसेब ज़दा (या'नी असरात वाले) के जिस्म पर मलें शरीर जिन्न दफ़्अ़ होगा, اِنْ شَآءَاللّٰہ ।

﴾9-10﴿ ज़ालिम से नजात पाने के लिये हर रोज़ पढ़िये, اِنْ شَآءَاللّٰہ उस से छुटकारा मिलेगा, यूंही दीगर दुश्मन भी दफ़्अ़ हो जाएंगे, اِنْ شَآءَاللّٰہ ।

(मज्मूअ़ए आ'माले रज़ा, स. 217, 219 मुलख़्ख़सन)

बरोज़े क़ियामत हमें अपने झन्डे
तले दीजियेगा जगह ग़ौसे आ'ज़म

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

अबू अ़त्तार का तआ़रुफ़

अमीरे अहले सुन्नत के वालिदे मोह़तरम का नाम "ह़ाजी अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ब्दुर्रह़ीम" था। आप तक़्सीम से क़ब्ल 1908 ई. में रियासते हिन्द जूनागढ़ के क़स्बे "कुतियाना" में पैदा हुए। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के दादाजान "अ़ब्दुर्रह़ीम" رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ इन्तिहाई सादा त़बीअ़त और आ़जिज़ी व इन्किसार वाले थे। आप एक स्कूल में उस्ताद (Teacher) थे।

अल्लाह पाक का पसन्दीदा नाम

अमीरे अहले सुन्नत के वालिदे मोह़तरम का नाम "अ़ब्दुर्रह़मान" था और येह बड़ा मुबारक नाम है जैसा कि **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम्हारे नामों में से **अल्लाह** पाक के नज़्दीक सब से ज़ियादा पसन्दीदा नाम अ़ब्दुल्लाह और अ़ब्दुर्रह़मान हैं।" (مسلم،ص1178،حدیث:2132)

क्या अमीरे अहले सुन्नत के वालिद साहि़ब क़ादिरी थे ?

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के वालिदे मोह़तरम ह़ाजी अ़ब्दुर्रह़मान मर्ह़ूम के नाम के साथ बा'ज़ इस्लामी भाई "क़ादिरी" लिखते हैं, अमीरे अहले सुन्नत इस ह़वाले से फ़रमाते हैं : मुझे वालिदे मोह़तरम की सिलसिलए क़ादिरिय्या में बैअ़त या उन के पीरो मुर्शिद के बारे में इ़ल्म नहीं, चूंकि अब अमीरे अहले सुन्नत के कोई बड़े भाई या बहन वग़ैरा ह़यात (या'नी ज़िन्दा) नहीं जो इस बात की तस्दीक़ करें अलबत्ता मश्हूर मुह़ावरे "ज़बाने ख़ल्क़ नक़्क़ारए ख़ुदा" के मिस्दाक़ मुम्किन है आप "क़ादिरी" ही हों जैसा कि शुरूअ़ में ह़ुज़ूर ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के क़सीदए ग़ौसिया का बा क़ाइदगी से इन के मा'मूल का बयान हुवा। وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِالصَّوَاب (और **अल्लाह** पाक ही दुरुस्त बात को ज़ियादा जानता है।)

अबू अ़त्तार के आ़दातो अत़वार

अमीरे अहले सुन्नत की विलादत के अन्दाज़न डेढ़ साल या दो साल बा'द वालिदे मोह़तरम का जद्दा शरीफ़ में इन्तिक़ाल हो गया (तफ़्सीली वाक़िआ़ आगे आ रहा है)। अमीरे अहले सुन्नत जब बड़े हुए तो आप के

एक पड़ोसी ने आप के वालिदे मर्हूम के बारे में बड़े अच्छे तअस्सुरात बयान किये, उन्हों ने बताया कि आप के वालिदे मोह़तरम ह़ाजी अ़ब्दुर्रह़मान मर्हूम नेक व परहेज़ गार शख़्स थे। उन की सुन्नत के मुत़ाबिक़ एक मुठ्ठी दाढ़ी थी। अक्सर निगाहें नीची रख कर चला करते थे। आप दौराने गुफ़्त्गू ह़दीसें बयान करते रहते थे। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं: वालिदे मोह़तरम के बारे में घर में सुना था कि वोह सीधे सादे शरीफ़ इन्सान थे कि लोग बहला फुस्ला कर उन से रक़म ले लिया करते थे, यूं येह कुछ जम्अ़ न कर पाए।

थे वोह ह़ाजी और नमाज़ी बा शरअ़ थी ज़िन्दगी
था अ़क़ीदा या नबी का वालिदे अ़त्तार का

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

ख़ानदानी तआ़रुफ़

अमीरे अहले सुन्नत के वालिदे मर्हूम ह़ाजी अ़ब्दुर्रह़मान के भाई और बहनों (या'नी अमीरे अहले सुन्नत के चचाओं और फूफियों) की ता'दाद या नाम वग़ैरा के बारे में कुछ मा'लूमात नहीं हैं अलबत्ता अ़ब्दुर्रह़मान मर्हूम के तीन बेटे और तीन बेटियां थीं। सब से बड़े बेटे का नाम अ़ब्दुल ग़नी, मन्झले (या'नी दरमियान वाले) बेटे का नाम अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (तक़रीबन 6 माह की उ़म्र ही में फ़ौत हो गए थे) और सब से छोटे मुह़म्मद इल्यास क़ादिरी जब कि तीन बेटियों में से एक बेटी कोलम्बो में रहती थीं और दो अपने मुल्क में। बड़ी बेटी का नाम "ख़दीजा बाई[1]" उन से छोटी "फ़ात़िमा बाई" और सब से छोटी साह़िब ज़ादी का नाम "ज़हरा बाई" था। अमीरे

1... "बाई" मेमनी ज़बान में ता'ज़ीम का लफ़्ज़ है जैसे मर्दों के लिये भाई।

अहले सुन्नत अपने बहन भाइयों में सब से छोटे हैं, शायद इसी वज्ह से आप की वालिदए मर्हूमा आप को प्यार से "बाबू" कह कर पुकारती थीं।

वालिद साहिब का इन्तिक़ाल

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की विलादत 26 रमज़ान शरीफ़ 1369 हिजरी मुताबिक़ 12 जूलाई 1950 ई. को हुई, 1370 हिजरी मुताबिक़ 1951 ई. में आप के वालिद साहिब ह़ज के लिये रवाना हुए, उस वक़्त अमीरे अहले सुन्नत की उ़म्र तक़रीबन डेढ़ या दो साल होगी, अमीरे अहले सुन्नत अपनी बड़ी बहन के ह़वाले से वालिद साहिब के सफ़रे ह़ज के लिये रवानगी का वाक़िआ़ बयान करते हैं कि मैं भी अपने घर के दीगर अफ़राद के साथ वालिद साहिब को अल वदाअ़ (See Off) करने के लिये एयरपोर्ट गया था। उस वक़्त ह़ालात बड़े पुर अम्न हुवा करते थे और हवाई जहाज़ के बिल्कुल पास जा कर जिस त़रह़ आज कल हमारे यहां बस या ट्रेन के पास खड़े हो कर मुसाफ़िरों को रुख़्सत करते हैं, मुसाफ़िरों को अल वदाअ़ (See Off) किया जाता था। वालिद साहिब की रवानगी के वक़्त मुझे बुख़ार था और मुझे एक गुलाबी रंग की शॉल में लपेट कर ले जाया गया, बड़े हो जाने के बा'द काफ़ी अ़र्से तक मैं उस गुलाबी शॉल (या'नी गुलाबी कम्बल) को देखा करता था जिस में लपेट कर मुझे वालिद साहिब को छोड़ने के लिये एयरपोर्ट ले जाया गया था।

मौलाना ह़श्मत अ़ली رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की दुआ़ की बरकत

फ़ज़ाए अ़रब में वालिद साहिब पहुंच गए, अय्यामे ह़ज (या'नी ह़ज के दिनों) में मिना शरीफ़ में सख़्त लू (या'नी गर्म हवा) चली, जिस में कई हुज्जाजे किराम फ़ौत और बहुत से ला पता हो गए। अमीरे अहले सुन्नत

के वालिदे मोह़तरम भी गुम होने वालों में शामिल थे, बड़ी कोशिश के बा'द भी जब वोह न मिले तो उन के एक रफ़ीक़े सफ़र का बयान है कि उस साल ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, शेरे बेशए सुन्नत ह़ज़रते मौलाना ह़श्मत अ़ली ख़ान ड़बैदे रज़वी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه भी ह़ज के लिये आए थे। हम ने उन की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर सारा मुआ़मला बयान किया और अ़र्ज़ की, कि "आप दुआ़ फ़रमा दें कि ह़ाजी अ़ब्दुर्रह़मान मिल जाएं।" ह़ज़रत ने दुआ़ की और फ़रमाया कि मिल जाएंगे (اِنْ شَآءَالله) । बिल आख़िर वोह जद्दा शरीफ़ के एक हस्पताल में सीरियस ह़ालत में मिले क्यूं कि मिना में लू लगने वाले ह़ाजियों को जद्दा मुन्तक़िल किया गया था। उन्हें लू लग गई थी, वोह जांबर न हो सके और इसी ह़ालत में 14 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम 1370 हिजरी को फ़ौत हो गए। اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ

जिस जगह पर आ़शिक़ों को मौत की है आरज़ू   क्या ही मस्कन है वोह प्यारा वालिदे अ़त्तार का

जब ह़लीमी वोह गए ह़ज पर वहीं के हो गए   ह़ज हुवा ऐसा निराला वालिदे अ़त्तार का

अल्लाह वालों से ह़ुस्ने ए'तिक़ाद

अमीरे अहले सुन्नत के वालिद साह़िब के दोस्त का कहना है : काश ! हम ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत ह़ज़रते मौलाना ह़श्मत अ़ली ख़ान ड़बैदे रज़वी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से सिर्फ़ मिलने की दुआ़ करवाने की बजाए यूं दुआ़ करवाते कि ह़ाजी अ़ब्दुर्रह़मान सह़ीह़ सलामत मिल जाएं और अपने बाल बच्चों तक पहुंच जाएं। क्या बईद **अल्लाह** पाक की रह़मत से दुआ़ क़बूल हो जाती और वोह घर वापस पहुंच जाते।

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो । आमीन

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

ख़ुश नसीब हाजी

अल्लाह पाक अबू अ़त्तार हाजी अ़ब्दुर्रह़मान (मर्हूम) की क़ब्र शरीफ़ पर अपनी रह़मतों की बारिश फ़रमाए, مَاشَآءَ اللّٰہُ الْکَرِیْم ! वोह कितने ख़ुश क़िस्मत थे कि उन्हें सफ़रे ह़ज के दौरान वफ़ात मिली। ह़दीसे पाक में सफ़रे ह़ज के दौरान फ़ौत होने वाले की बड़ी फ़ज़ीलत बयान हुई है। **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो ह़ज के लिये निकला और फ़ौत हो गया, क़ियामत के दिन तक उस के लिये ह़ज करने वाले का सवाब लिखा जाएगा।" (معجم اوسط،4/93،حدیث:5321)

बे ह़िसाब मग़्फ़िरत की ख़ुश ख़बरी

मक्के मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो इस राह में ह़ज या उ़म्रे के लिये निकला और फ़ौत हो गया उस की पेशी नहीं होगी, न ह़िसाब होगा और उस से कहा जाएगा : तू जन्नत में दाख़िल हो जा।"

(مسند ابی یعلٰی،4/152،حدیث:4589)

मुझे हर साल तुम ह़ज पर बुलाना या रसूलल्लाह बुलाना और मदीना भी दिखाना या रसूलल्लाह
रहे हर साल मेरा आना जाना या रसूलल्लाह बक़ीए़ पाक हो आख़िर ठिकाना या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश, स. 333)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का अबू अ़त्तार पर करम (वाक़िआ़)

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की बड़ी बहन फ़ात़िमा बाई (जिन की वफ़ात बरोज़ जुमुआ़ 26 ज़ुल ह़ज शरीफ़ 1439 हिजरी मुत़ाबिक़

7-9-2018 को हुई। उन्हों) ने अमीरे अहले सुन्नत के वालिदे मोह़तरम के इन्तिक़ाल के बा'द एक बड़ा मुबारक ख़्वाब देखा, फ़रमाती हैं : मैं देखती हूं कि वालिदे मोह़तरम एक निहायत ही नूरानी चेहरे वाली बुज़ुर्ग हस्ती के साथ तशरीफ़ लाए और मेरा हाथ पकड़ कर कहने लगे : "बेटी इन्हें पहचानती हो ? येह हमारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं।" फिर नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ पर निहायत ही शफ़्क़त करते हुए फ़रमाया : "तुम बहुत ख़ुश क़िस्मत हो।"

अल्लाह पाक की इन सब पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِين بِجاهِ خاتَمِ النَّبِيّٖن صلَّى اللهُ عليهِ واٰلهٖ وسلَّم

वाह वाह क्या है रुत्बा अबू अ़त्तार का
है करम इन पर ख़ुदा और मेरे सरकार का

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

अबू अ़त्तार की विरासत

अमीरे अहले सुन्नत के वालिदे साह़िब ने जायदाद में 120 गज़ का एक प्लोट छोड़ा। उस वक़्त वोह अ़लाक़ा बिल्कुल ग़ैर आबाद था। अमीरे अहले सुन्नत अपने बड़े भाई मर्ह़ूम अ़ब्दुल ग़नी साह़िब के साथ बड़े हो कर उसे देखने भी गए थे। वालिद साह़िब की एक किताब "तज़्किरतुल औलिया" अमीरे अहले सुन्नत के पास थी, जिस पर वालिद साह़िब का नाम लिखा हुवा था।

अमीरे अहले सुन्नत की अपने वालिद साह़िब के एक दोस्त से मुलाक़ात (वाक़िआ़)

अमीरे अहले सुन्नत के वालिदे मोह़तरम के एक दोस्त किसी

अ़लाक़े में रहते थे, एक मरतबा वोह अमीरे अहले सुन्नत के पास जहां आप इमामत करवाया करते थे, आए और आ कर अमीरे अहले सुन्नत को बताया कि मैं आप के वालिद साहि़ब का दोस्त हूं। कभी मेरे घर तशरीफ़ लाएं। अमीरे अहले सुन्नत की उन से दोबारा कभी मुलाक़ात हुई न उन के घर जाना हो सका वरना उन के ज़रीए़ से आप के वालिदे मर्हू़म के मुतअ़ल्लिक़ कुछ मज़ीद बातें भी पता चल सकती थीं।

अब्बूजान की याद ने नन्हे से दिल को तड़पा दिया (वाक़िआ़)

अमीरे अहले सुन्नत फ़रमाते हैं : मैं एक मरतबा बचपन में घर के बरआमदे में था। मेरे नन्हे से दिल में येह ख़याल आया कि "सभी बच्चे किसी न किसी को बापा, बापा[1] (या'नी अब्बू अब्बू) कह कर उन से लिपटते हैं, फिर उन के बापा उन्हें गोद में उठा कर प्यार करते हैं, उन्हें शीरीनी (या'नी चीज़ें) दिलाते हैं और कभी कभी खिलोने भी दिलाते हैं, काश ! हमारे घर में भी बापा होते, मैं भी उन से लिपटता और वोह मुझे प्यार करते।" येह सोच कर मेरा नन्हा सा दिल भर आया, मैं ने बे इख़्तियार रोना शुरूअ़ कर दिया। मेरे रोने की आवाज़ सुन कर मेरी बड़ी बहन आईं और अपने नन्हे यतीम भाई को गोद में ले कर बहलाने लगीं।

दिल पर ग़म के ग़लबे की वज्ह

गु़र्बत और यतीमी के आ़लम में आंख खोलने वाली, आ़लमे इस्लाम की इ़ल्मी व रूहा़नी शख़्सिय्यत अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के दिल पर अक्सर ग़म की कैफ़िय्यत ग़ालिब रहती है, अपने ख़ानदान, वालिदैन, भाई बहनों की उल्फ़तो मह़ब्बत फ़ित़्रते इन्सानी का तक़ाज़ा है।

1... "बापा" मेमनी ज़बान में वालिद को कहते हैं।

बचपन में वालिदे मोह़तरम का इन्तिक़ाल, यतीमी की ह़ालत में परवरिश, घर में ग़ुर्बत के डेरों की वज्ह से लड़कपन से ही कामकाज शुरूअ़ कर देना, जवानी में घर के वाहि़द कफ़ील, वालिद का सा साया उठ जाना या'नी बड़े भाई का ट्रेन ह़ादिसे में फ़ौत होना फिर सब से बढ़ कर प्यार व मह़ब्बत करने वाली हस्ती, वालिदए मोह़तरमा भी वफ़ात पा गईं।[1] इस ग़मो अलम ने दिल पर ऐसे असरात छोड़े कि दिल सदमों से चूर चूर हो गया। इसी अ़ालम में आप ने अपने शफ़ीक़ो मेह्रबान आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में बड़े दर्द भरे अल्फ़ाज़ में ब सूरते अश्आ़र फ़रियाद की है :

घटाएं ग़म की छाईं, दिल परेशां या रसूलल्लाह — तुम्हीं हो मुझ दुखी के दुख का दरमां या रसूलल्लाह
मैं नन्हा था, चला वालिद, जवानी में गया भाई — बहारें भी न देखी थीं चली मां या रसूलल्लाह
सफ़ीने के परख़्चे उड़ चुके हैं ज़ोरे तूफ़ां से — संभालो ! मैं भी डूबा ऐ मेरी जां या रसूलल्लाह
नसीमे त़यबा से कह दो दिले मुज़्तर को झोंका दे — ग़मों की शाम हो सुब्हे बहारां या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश, स. 347)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

वालिद साहि़ब की तदफ़ीन

जिस साल अमीरे अहले सुन्नत के वालिद साहि़ब का इन्तिक़ाल हुवा, कहा जाता है उस साल बहुत से हुज्जाजे किराम लू लगने की वज्ह से फ़ौत हुए, उन्हीं में अमीरे अहले सुन्नत के वालिदे मोह़तरम 14 ज़िल ह़ज शरीफ़ को फ़ौत हुए और उन्हें जद्दा शरीफ़ के किसी क़ब्रिस्तान में दफ़्न किया गया। **अल्लाह** पाक उन्हें ग़रीक़े रह़मत करे।

1... अमीरे अहले सुन्नत की वालिदए मोह़तरमा की सीरत के बारे में मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये मक्तबतुल मदीना का रिसाला "फ़ैज़ाने उम्मे अ़त्तार" पढ़िये। या दा'वते इस्लामी की वेब साइट www.dawateislamiindia.org से मुफ़्त डाउनलोड कीजिये।

www.dawateislami.net

मेमनी में अल्फ़ाज़ का बिगाड़

दीगर ज़बानों की त़रह़ मेमनी में भी अल्फ़ाज़ और नामों को बिगाड़ा जाता है, कुरआनी अल्फ़ाज़ और अ़रबी नामों में ख़ास एह़तियात़ की ज़रूरत है, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने फ़रमाया : अ़ब्दुर्रह़मान नाम को हमारी मेमन बिरादरी के कुछ लोग مَعَاذَ الله "अध रेमान" बोलते हैं। ऐसा नहीं करना चाहिये बल्कि जो नाम हो वोही बोलना चाहिये। अ़ब्दुर्रह़मान नाम तो बहुत ही प्यारा और मुक़द्दस नाम है, **अल्लाह** पाक के मुबारक नाम की निस्बत की बरकत से इस नाम का तो अदब बहुत ज़ियादा करना चाहिये।

आबाई गाउं से लगाव

अमीरे अहले सुन्नत के वालिदैन का आबाई गाउं "कुतियाना" जूनागढ़, गुजरात, हिन्द है। इन्सान को फ़ित़्रती त़ौर पर अपने आबाई गाउं से लगाव होता है, आप कभी अपने आबाई गाउं तशरीफ़ नहीं ले गए, दा'वते इस्लामी के ज़िम्मेदारान ने एक मरतबा वहां जा कर अमीरे अहले सुन्नत की अम्मीजान के ईसाले सवाब का सिल्सिला किया और उस की वीडियो दा'वते इस्लामी के चेनल के मक़्बूले आ़म प्रोग्राम "मदनी मुज़ाकरे" में चली तो अमीरे अहले सुन्नत ने फ़रमाया : मुझे बहुत अच्छा लगा, काश ! मैं भी अपना आबाई गाउं देखता।

वालिदैन की नेकी का असर

अल्लाह पाक ने कुरआने करीम के पन्दरहवें पारे में **सूरतुल कहफ़** में ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام का दो यतीम बच्चों का ख़ज़ाना बचाने वाला वाक़िआ़ बयान फ़रमाया है जिसे तफ़्सीली त़ौर पर "तफ़्सीरे सिरातुल

जिनान" या मक्तबतुल मदीना के रिसाले "पुर असरार ख़ज़ाना" से पढ़ा जा सकता है। तफ़ासीर में इस वाक़िए के तहत लिखा है कि उन यतीम बच्चों का सातवीं या दसवीं पुश्त पर जो वालिद था वोह नेक था और उस की नेकी की बरकत से सात या दस पुश्तों के बा'द आने वाले बच्चों पर करम हुवा। अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دامت برکاتہم العالیہ इस सदी के अ़ज़ीम बुज़ुर्ग हैं। आप की अम्मीजान का ज़िक्रे ख़ैर "फ़ैज़ाने उम्मे अ़त्तार" नामी रिसाले में बयान हुवा, आप ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाली, घर में बारहा ग़ौसे पाक ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رحمۃ اللہ علیہ की माहाना ग्यारहवीं शरीफ़ मनाने वाली, हुक़ूक़ुल इ़बाद के मुआ़मले में डरने वाली नेक ख़ातून थीं और अमीरे अहले सुन्नत के अब्बूजान भी नेक व परहेज़ गार इन्सान थे। क्या बई़द अमीरे अहले सुन्नत को आज दुन्या में मिलने वाला अ़ज़ीमुश्शान मक़ाम मां बाप के नेक आ'माल ही का सदक़ा हो। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہما फ़रमाते हैं : "बेशक **अल्लाह** पाक इन्सान की नेकोकारी से उस की औलाद और औलाद, दर औलाद की इस्लाह़ फ़रमा देता है और उस की नस्ल और उस के पड़ोसियों में उस की ह़िफ़ाज़त फ़रमाता है और वोह सब **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से पर्दा और अमान में रहते हैं।" (تفسیر درمنثور، 5/422)

अमीरे अहले सुन्नत की दीनी ख़िदमात

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की दीनी ख़िदमात को ज़माना जानता, मानता है, आप की मेह़नतों और कोशिशों से **अल्लाह** पाक के प्यारे

प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इश्क़ और सुन्नतों और मस्लके ह़क़ आ'ला ह़ज़रत को बड़ा फ़रोग़ मिला है। लाखों नौ जवानों ने चेहरों पर दाढ़ियां, सरों पर इमामे शरीफ़ के ताज सजाए और सुन्नत के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने वाले बने, लाखों इस्लामी बहनों ने ग़ैर शरई फ़ेशन और बे पर्दगी से तौबा कर के इस्लामी पर्दा अपनाया। **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त अमीरे अहले सुन्नत के लगाए हुए इस बाग़ को ता क़ियामत फलता फूलता और मदीने के सदा बहार फूलों के सदक़े महक्ता रखे और आप के मां बाप जो दर अस्ल हमारे मोह़सिन हैं उन्हें इस का ख़ूब अज्रो सवाब पहुंचाए। **अल्लाह** पाक उन के सदक़े दीगर मां बाप को भी राहे ख़ुदा व मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ و صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर चलने और अपनी औलाद को चलाने की तौफ़ीक़ इनायत फ़रमाए। اٰمِين بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

जिन का बेटा सुन्नियों के दिल की धड़कन बन गया मिल गया हम को उतारा वालिदे अ़त्तार का

फ़ैज़ाने अबू अ़त्तार मस्जिद में फ़ैज़ाने इस्लाम

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْكَرِيْم ! आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक दा'वते इस्लामी की मजलिस **"ख़ुद्दामुल मसाजिद वल मदारिस"** सेंकड़ों बल्कि हज़ारों मसाजिद बना चुकी है। **अल्लाह** पाक के फ़ज़्लो करम से फ़र्स्ट जून 2024 की कारकर्दगी के मुत़ाबिक़ अन्दाज़न रोज़ाना डेढ़ से दो मसाजिद का सिल्सिला जारी है, कहीं प्लोट लिया जा रहा है तो कहीं मस्जिद का इफ़्तिताह़ हो रहा है, कहीं किसी मस्जिद की ता'मीरात हो रही हैं तो कहीं नमाज़ें शुरूअ़ हो चुकी हैं। अमीरे अहले सुन्नत के वालिदे मोह़तरम ह़ाजी अ़ब्दुर्रह़मान के ईसाले सवाब के लिये साउथ अफ़्रीक़ा के शहर जोहानिस्बर्ग

के अ़लाक़े **"सवेटो"** (Soweto) में **"फ़ैज़ाने अबू अ़त्तार"** नामी मस्जिद क़ाइम है।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

(वसाइले बख़्शिश, स. 322)

सिल्सिलए क़ादिरिय्या में मुरीद व त़ालिब होने की बरकत

फ़रमाने ग़ौसे पाक ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه : **अल्लाह** पाक ने मुझ से वा'दा फ़रमाया है कि मेरे मुरीदों को जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा। (بہجۃ الاسرار، ص193 ملخصاً)

सुना "ला तख़फ़" तेरा फ़रमाने आ़ली ग़ुलामों की ढारस बंधी ग़ौसे आ'ज़म

मश्वरतन अ़र्ज़ है

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه इस दौर की बड़ी इ़ल्मी व रूह़ानी शख़्सिय्यत हैं, जिन की बरकत से हज़ारों गुमराह हिदायत याब हुए और लाखों मुसल्मानों की ज़िन्दगियां बदल गईं और वोह राहे सुन्नत पर चल पड़े, ख़ैर ख़्वाहिये मुस्लिम के जज़्बे के तह़त **मश्वरतन** अ़र्ज़ है कि आप भी अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه के ज़रीए सय्यिदी हु़ज़ूर ग़ौसे पाक ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के सिल्सिले में मुरीद हो जाइये और अगर आप पहले से किसी पीर साहि़ब के मुरीद हैं तो बैअ़ते बरकत ह़ासिल करने के लिये त़ालिब हो जाइये, अपने बच्चों को भी बैअ़त करवा दीजिये, अपने घर के हर फ़र्द बल्कि हर जान पहचान वाले को इस नेक काम के लिये तय्यार कीजिये। मुरीद होने में ख़र्च कुछ नहीं होता, मुफ़्त में ढेरों सवाब का ख़ज़ाना हाथ आता है और दुन्या व आख़िरत की बे शुमार भलाइयां मिलती हैं।

ब ज़रीअ़ए WhatsApp मुरीद बनिये :

मुरीद होने या किसी और को मुरीद करवाने वाले के लिये उन का नाम मअ़ वलदिय्यत और उ़म्र लिख कर +91 9702626112 पर वाट्सएप कीजिये।

❀ इस नम्बर पर कॉल रीसीव नहीं होती, सिर्फ़ टेक्स्ट की सूरत में येह तफ़्सीलात भेजिये।

अमीरे अहले सुन्नत के वालिदे मोह़तरम की शान में चन्द अश्आ़र

चारपाई भी क़सीदा सुन के होती थी बुलन्द
पढ़ना है ऐसा अनोखा वालिदे अ़त्तार का

थे वोह ह़ाजी और नमाज़ी बा शरअ़ थी ज़िन्दगी
था अ़क़ीदा या नबी का वालिदे अ़त्तार का

जिन का बेटा सुन्नियों के दिल की धड़कन बन गया
मिल गया हम को उतारा वालिदे अ़त्तार का

जिस जगह पर आ़शिक़ों को मौत की है आरज़ू
क्या ही मस्कन है वोह प्यारा वालिदे अ़त्तार का

जब ह़लीमी वोह गए ह़ज पर वहीं के हो गए
ह़ज हुवा ऐसा निराला वालिदे अ़त्तार का

अगले हफ़्ते का रिसाला